मई 2019

सामान्य ज्ञान दर्पण

वर्ष 32 दशम् अंक

इस अंक में...

7 सम्पादकीय

विशेष स्तम्भ

9 समसामयिक सामान्य ज्ञान

14 प्रमुख नियुक्तियाँ

15 आर्थिक परिदृश्य

19 राष्ट्रीय परिदृश्य

25 अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य

29 क्रीड़ा जगत्

31 भारतीय चुनाव प्रणाली : सिद्धान्त से यथार्थ तक

35 समसामयिक महत्वपूर्ण तथ्य

36 सारभूत तत्व कोष

39 अनुप्रेरक युवा प्रतिभाएं

लेख

41 सामयिक लेख—गड़बड़ी ईवीएम में या राजनीतिक दलों की सोच में ?

43 कृषि सम्बन्धित लेख—कृषि में हरी खाद्य की महत्ता

हल प्रश्न-पत्र

45 एस.एस.सी. संयुक्त हायर सेकण्डरी लेवल (10+2) परीक्षा, 2018

52 उत्तराखण्ड समूह 'ग' परीक्षा, 2018

57 रेलवे रिक्रूटमेण्ट बोर्ड ग्रुप 'डी' परीक्षा, 2018

64 राजस्थान पुलिस कॉंस्टेबिल भर्ती परीक्षा, 2018

71 केन्द्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा, 2018

85 आगामी झारखण्ड विशेष शाखा आरक्षी (क्लोज कैडर) परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

95 आर.आर.बी. (NTPC) कम्प्यूटर आधारित परीक्षा का मॉडल हल प्रश्न

104 आगामी कर्मचारी राज्य बीमा निगम अपर डिवीजन क्लर्क प्रारम्भिक परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

विशेष/सामान्य

112 वार्षिक रिपोर्ट 2017-18—सूचना और प्रसारण क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास के बढ़ते चरण—एक दृष्टि में

114 सामान्य जानकारी—विश्व में हिन्दी से सम्बन्धित महत्वपूर्ण तथ्य : एक दृष्टि में

116 महत्वपूर्ण लघु टिप्पणियाँ

120 ज्ञान वृद्धि कीजिए

121 रोजगार समाचार

सामान्य ज्ञान दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. **-सम्पादक**

• **E-mail :** publisher@pdgroup.in • **Website :** www.pdgroup.in

सम्पादकीय

निष्क्रिय मत बनिए

यदि गम्भीरतापूर्वक विचार किया जाए, तो हमें विदित होगा कि जिन पदार्थों को हम जड़ कहते हैं, वे भी किसी-न-किसी रूप में गतिवान् बने रहते हैं. पृथ्वी, सूर्य, चन्द्र आदि गतिवान् हैं. एक स्थान पर रखे हुए पदार्थ, खूँटी पर टँगे हुए वस्त्रादि कभी-कभी अपने-आप गिर पड़ते हैं. बात सही है कि जो हमें गतिवान् नहीं दिखाई देता है, वह भी वस्तुतः गतिवान् है. उपनिषद् कहता है कि ब्रह्माण्ड स्थिर प्रतीत होता है, परन्तु वह भी गतिमान् है– ''तदेजति तनैजति.'' संवेदनशीलता की सीमाएं हमारे ज्ञान की भी सीमाएं बनती हैं. वस्तुतः गति सृष्टि का शाश्वत एवं सर्वव्यापी नियम है, तब हम गतिहीन होने की ओर, निष्क्रिय होने की ओर प्रवृत्त होने का प्रयत्न क्यों करें? निष्क्रिय व्यक्ति जीवित लाश कहा जाता है. क्या कोई भी व्यक्ति चाहेगा कि उसको इतना निकम्मा एवं मृततुल्य समझा जाए?

यदि सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, वायु गतिहीन हो जाएं, चलना बन्द कर दें, तो क्या हो? हमारे ऊपर क्या बीते? क्या हमने कभी सोचा है? मनुष्य यदि हाथ पर हाथ रखकर बैठ जाएं, सर्वथा निष्क्रिय होने की बात करने लगें, तो परिणाम क्या हो? हम अपने विनाश का मार्ग स्वयं प्रशस्त करेंगे. यही इस प्रश्न का सीधा-सा उत्तर है. युद्ध-स्थल में पहुँचकर अर्जुन ने प्रायः ऐसा ही किया था. संजय के शब्दों में–''रणभूमि में शोक से उद्विग्न मनवाले अर्जुन इस प्रकार कहकर बाण सहित धनुष को त्याग कर रथ के पिछले भाग में बैठ गए.'' (गीता 1.47) अर्जुन को युद्ध में प्रवृत्त करने के लिए भगवान श्रीकृष्ण को श्रीमद्भगवद्गीता का उपदेश देना पड़ा. हमारे जीवन को प्रेरणा प्रदान करने के लिए गीता रूपी भगवान सदैव हमारे सामने प्रस्तुत रहते हैं.

सामान्य अनुभव की बात है. डॉक्टर के परामर्श के अनुसार हम जब पूर्ण विश्राम करते हैं, तब भी सर्वत्र निष्क्रिय नहीं रहते हैं. भोजन, शयन, मल-मूत्र त्याग आदि कार्य चलते रहते हैं, बोलते भी हैं, चिन्तन भी करते हैं. निःसन्देह कोई भी मनुष्य किसी भी काल में क्षणमात्र भी बिना कर्म किए नहीं रहता, क्योंकि मनुष्य सदा प्रकृति जनित गुणों द्वारा कर्म करने के लिए बाध्य किया जाता है.

इसी सन्दर्भ में भगवान श्रीकृष्ण का यह कथन हमें सावधान भी करता है कि ''यदि मैं कर्म न करूँ तो सब मनुष्य नष्ट-भ्रष्ट हो जाएं''. (गीता 3·24). अनुसारी परिणाम होगा प्रलय.